International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(3): 12-15

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(3): 12-15
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 04-03-2018
Accepted: 05-04-2018

डॉ. वेद प्रकाश मिश्र
प्रोफेसर, संस्कृत विभागाध्यक्ष,
डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय,
करगी रोड़ कोटा, बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

श्रीमती रजनी किरण लकड़ा
एम.फिल. संस्कृत, डॉ.सी.वी.रामन्
विश्व विद्यालय करगीरोड कोटा,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

Correspondence
डॉ. वेद प्रकाश मिश्र
प्रोफेसर, संस्कृत विभागाध्यक्ष,
डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय,
करगी रोड़ कोटा, बिलासपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

वेणीसंहार नाटक में पात्रों का वैशिष्ट्य

डॉ. वेद प्रकाश मिश्र, श्रीमती रजनी किरण लकड़ा

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध पत्र में वेणीसंहार नाटक में पात्रों का वैशिष्ट्य विषय का विवरण प्रस्तुत किया गया है किसी भी नाटक में नायक वही प्रधान पात्र होता है जो कि उस नाटक में प्रमुख भूमिका का निर्वाह करता है। यद्यपि इस नाटक में युधिष्ठिरादि, पांडव तथा दुर्योधन प्रमुख कौरवों को पात्र बनाया गया है। नाटक की संपूर्ण घटना का श्रेय भीमसेन को ही मिलता है। भीम ही एक ऐसा महान योद्धा है जो कि नाटक में प्रारंभ से अंत तक अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करने में संलग्न रहता है। अतः वेणीसंहार नाटक का धीरोदात्त नायक भीम ही है।

नाटक में नायक नायिका का स्त्री–पुरुष भावात्मक संबंध होता है। यद्यपि द्रौपदी, युधिष्ठिर पांचों पाण्डवों की पत्नी है। उसका स्पृष्णीय संबंध केवल भीमसेन के साथ रहता है। वह एकमात्र भीम को ही 'नाथ' और 'आर्यपुत्र' से संबोधित करती है। नाटक के प्रारंभ में चोटी संवारने के संकल्प से लेकर चोटी संवारने के अंत तक भीमसेन का संबंध द्रौपदी से ही रहता है। नाटक की नायिका स्कीया मुग्धा नायिका द्रौपदी है।

नाटक में नायक की प्रतिस्पर्धा करने वाला पात्र प्रतिनायक कहलाता है। प्रतिनायक सदैव नायक का अपकार करने में लगा रहता है, क्षण भर के लिए कोई दूसरे को सहन नहीं कर सकता है तथा अंत में नायक द्वारा प्रतिनायक पराजित होता है। नाटक में जहां एक ओर समस्त घटनाएं भीम को नायक प्रतिपादित करती है तो दूसरी और दुर्योधन को प्रतिनायक भी प्रतिपादित करती है।

प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रणः महाकवि भट्टनारायण का महाभारत पर आधारित वेणीसंहार नाटक महाकवि भी एक मात्र रचना है नाटक का नाम उस में घटित घटनाओं को लेकर किया जाता है। वेणीसंहार का अर्थ है खुली छोटी को बांधना भीमसेन नाटक के प्रारंभ में ही अपनी प्रियतमा द्रौपदी की दुशासन द्वारा खींची जाने के कारण खुली चोटी को संवारने या बांधने की प्रतिज्ञा की थी तथा उसको पूर्ण करने के लिए ही नाटक की संपूर्ण घटना हुई है।

भीमः नाटक में सर्वत्र भीम का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। अंक द्वितीय, अंक तृतीय और अंक चतुर्थ में वह सामने नहीं हैं फिर भी उसकी उपस्थित होने का बोध निरंतर बना रहता है। भीमसेन के प्रचंड साहस और जोश के कार्य की उत्कृष्ट अभिलाषा का चित्रण दिखाई पड़ता है। नाटक का नायक भीमसेन शारीरिक रूप से अनुपम शक्तिशाली एवं मानसिक रूप से दृढ़ता का साक्षात स्वरूप है। उसमें शत्रुओं की विशाल सेना को अकेले ही नष्ट कर देने की क्षमता है। वह कौरवों से शैशवकाल से ही शत्रुता का मूल अपने को मानता है –

प्रवृंद्ध यद्वैरं मम खलु शिशोरेव कुरूभिः
नं तत्रार्यो हेतुर्न भवति किरोटी न च युवाम्।
जरासंधस्योरः स्थलमिव विरूढ़ं पुनरपि
क्रुधा संधि भीमो विद्यटयति यूयं धटयत।। [1]

अर्थात् – बचपन से ही मेरा कौरवों के साथ जो बैर बढ़ता रहा है उसका कारण ना आर्य युधिस्ठिर है, ना अर्जून है और ना तुम लोग ही हो। जरासंघ के वक्षस्थल के समान फिर से वियोजित संधि को भीमसेन क्रुद्ध होकर तोड़ रहा है।

लाक्षागृहानलबिषात्रसभाप्रवेशैः
प्राणेषु वित्तनिचयेषु च नः प्रहृत्य।
आकृष्यपाण्डववधूपरिधानकेशान्
स्वस्था भवन्ति मयि जीवति धार्तराष्ट्राः।।[2]

अर्थात् – लाक्षागृह के अग्निकाण्ड विषयुक्त भोजन सभा में द्रौपदी के वस्त्रों व केशों को खीचना आदि भयंकर कार्य करके हम लोगों के प्राणों तथा जुआ आदि क्रियाओं द्वारा धनसंग्रह पर आक्रमण कर के मेरे जीवित होते हुए धृतराष्ट्र पुत्र दुर्योधन आदि स्वस्थ्य रह सकेंगे।

युधिष्ठिरः

युधिष्ठिर एक सामान्य व्यक्तित्व के पात्र है वास्तव में उनका चरित्र क्षत्रियों चित्र नहीं कहा जा सकता वह नितांत सरल शांत प्रकृति के राजा हैं। समस्त महाभारत इन्हीं के कर्मों का प्रतिफल है। संतुष्ट नृपति कभी राज्य समाज में अद्भुत नहीं हो पाता यद्यपि अपार भ्रातृ स्नेह के कारण वह यहां तक कहते हैं कि मैं एक भी पांडव के युद्ध में मारे जाने पर जीवित नहीं रह सकूंगा। पॉच नगर लेकर संतुष्ट रहने के लिए वह संधि का भी प्रयत्न करते हैं। सामान्य जन उचित आचरण मात्र करने के कारण उनका चरित्र नाटक में कुछ विशेष महत्वपूर्ण स्थान नहीं बन पाया है।

तीर्ण भीस्ममहोदधौ कथमपि द्रोणानले निर्वते
कर्णाऽऽशोविषभोगिनि प्रशमिते शल्ये च याते दिवम्।
भीमेन प्रियसाहसेन रभसात्स्वल्पाऽवशेषे जये
सर्वे जोवितसंशयं वयममी वाचा समारोपिताः।।[3]

अर्थातः भीमरुपी महासागर को पाटकर द्रोण के क्रोधानल किसी प्रकार शांत हो जाने पर कर्म रूपी काले नाग के मिट जाने पर तथा मद्र नरेश शल्य के स्वर्गवासी हो जाने पर नाम मात्र को विजय शेष रह गई थी इस दशा के प्रिय साहसी भीम ने शीघ्रता से दुर्योधन के साथ युद्ध में फंसकर हम सब लोगों को वाणी से जीवन का संशय उत्पन्न कर दिया है।

दुर्योधन

दुर्योधन अत्यंत स्वार्थी मदांध विलासी दुर्योधन प्रकृत नाटक का प्रतिनायक है। अपनी तुलना में समस्त संसार को तृणवत मानता है। संपूर्ण महाभारत उसकी हठ वादिता एवं स्वेच्छाचारिता का ही प्रतिफल है। कौरवों की विशाल वाहिनी के कर्णधार भीष्म–द्रोण, कृ पाचार्य तथा कर्ण जैसे महारथियों के संग्राम में मारे जाने पर भी वह अपने मार्ग से विचलित नहीं होता है। उसे अपने स्वार्थ पूर्ति हेतु संसार का विनाश करा डालने में भी संकोच नहीं है अपनी अनुपम बाण विद्या से विश्व को आश्चर्य में डालने वाले आचार्य द्रोण के युद्ध में मारे जाने पर भी तदर्थ शोक ना कर उनकी निंदा करना उसकी मदांधता का परिचायक है। यहां तक कि अपने एकमात्र बहनोई जयद्रथ को मारने की अर्जुन प्रतिज्ञा को सुनकर भी वह विशेष चिंतित नहीं होता है। अपने विवेक से कार्य न कर नीच प्रवृत्ति कर्ण तथा शकुनि के परामर्श को ही सुख मंत्र मानने से उसकी विवेक शून्यता प्रकट होती है।

छलपूर्वक पांडवों को हराकर उनके राज्य को लेने के साथ द्रौपदी के वस्त्र एवं केशों को खींचकर द्रौपदी को भरी सभा में अपमानित करता है।

दुर्योधन को उच्च कुल में उत्पन्न राज्य पुरुष है दुर्योधन में युद्ध में अपने विपक्ष में अपने भाई के विरुद्ध में युद्ध करना पड़ता है। अपने राज्य के विरुद्ध युद्ध करना पड़ता है। अतः यह कहा जा सकता है कि नाटककार में प्रतिनायक के व्यक्तित्व के विकास को सजा संवाकर प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

कर्ण

यह नाटक का परमवीर अनुपम उत्साही दृढ़ी तथा दुरभिमानी पात्र है। प्राकृतिक दुष्टता के कारण उसे किसी का भी उत्कर्ष सहय नहीं है। वह पुरुष पर अधिक विश्वास रखता है।यद्यपि राज्यश्री के शौर्यादि के अनेक गुण कर्ण में कूट–कूटकर भरे पड़े हैं। कर्ण प्रमुख पात्रों में से एक है। कर्ण दुर्योधन का सबसे अच्छा मित्र था।युद्ध में वह अपने भाइयों के विरुद्ध लड़ा वह सूर्यपुत्र था। कर्ण को एक आदर्श दानवीर माना जाता है क्योंकि कर्ण ने कभी भी किसी मांगने वाले को दान में कुछ भी देने से कभी मना नहीं किया इसके परिणाम स्वरुप अपने ही प्राण संकट में क्यों न पड़ गए हों।

कर्ण की छवि आज भी भारतीय जनमानस में एक ऐसे महायोद्धा की है जो जीवन भर प्रतिकूल परिस्थितियों से लड़ता रहा। लोगों का यह भी मानना है कि कर्ण को कभी भी वह सब नहीं मिला जिसका वह वास्तविक रूप से अधिकारी था। कर्ण कवच एवं कुंडल पहने हुए पैदा हुए थे और उसका दान इंद्र को किया था। उसकी गणना कौरव सेना के साथ महारथियों में होती है उसे दुर्योधन ने अंग नाम का एक राज्य भी प्राप्त हुआ था।

महाभारत युद्ध में कर्ण की मृत्यु अर्जुन के हाथों हुई –

सूतो वा सूतपुत्रो वा यो वा को वा भवाम्यहम्।
दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरूषम्।।[4]

अर्थातः सूत हूं अथवा सूत पुत्र हूं जो कुछ भी मैं हूं। कुल में जन्म होना भाग्य के अधीन होता है पौरुष तो मुझ पर ही निर्भर है।

यदि शस्त्रमुज्झितमशस्त्रपाणयो
न निवारयन्ति किमरीनुदायुधान्।
यदनेन मौलिदलनेऽत्युदासितं
सुचिरं स्त्रियेव नृपचक्रसत्रिधौ।।[5]

अर्थातः यदि उन्होंने शस्त्र त्याग भी दिया था तो क्या निशस्त्र व्यक्ति शस्त्र उठाने वाले शत्रुओं के आक्रमण को रोकते नहीं है जैसा कि इन्होंने नृपवर्ग के सामने सिर काटे जाने पर भी अबला के समान बड़ी देर तक उदासीनता ही दिखलाई।

अश्वत्थामा

आचार्य गुरुद्रोण का पुत्र अश्वत्थामा अत्यंत पराक्रमी धनुर्विद्या में पारंगत पितृ–भक्त तथा आत्माभिमानी व्यक्ति है। उसे अपने पिता के प्रति अपार श्रद्धा तथा उनके शौर्य एवं सामर्थ्य पर अटूट विश्वास है। अपारशक्ति उसके रोम–रोम में भरी है। वह अपने पिता द्रोणाचार्य के युद्ध में मारे जाने पर अगाध–प्रेम के कारण तत्क्षण प्राण त्याग कर स्वर्ग में उनसे मिलने के लिए भी तैयार हो जाता है। जब दुर्योधन के समक्ष कर्ण द्रोणाचार्य की निंदा करने लगता है तो वह कर्ण पक्षपाती दुर्योधन की नीति के खिन्न होकर अस्त्र शस्त्र परित्याग कर बैठता है। यह सच्चा कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति है। यद्यपि पिता की हत्या के पश्चाताप कर्ण से हुए वार्तालाप में अस्त्र त्याग की प्रतिज्ञा कर लेता है परंतु जिस समय भीम दुशासन की छाती फाडने के लिए उसे पकड़ लेता है।

अध मिश्याप्रतिज्ञोऽसौ किरोटी कियते मया।
शस्त्रं ग्रहाण वा व्यक्त्वा मौलौ वा रचयाञ्जलिम्।।[6]

अर्थात्: आज उस अर्जुन की तुझे मारने वाली प्रतिज्ञा मैं स्वयं तुझे मारकर झूठी कर रहा हूं। युद्ध करने के लिए शस्त्र पकड़ो अथवा उसे त्याग कर हाथ जोड़ो क्षमा याचना करो।

अयं पापो यावत्र निधनमुपेयादरिशरैः
परिव्यक्तं तावत्प्रियमपि मयाऽस्त्रं रणमुखे।

बलानां नाथेऽस्मिन्परिकुपितमीमार्जुनभये
समुत्पत्रे राजा प्रियसखबलं वेत्तु समरे।।[7]

अर्थातः जब तक यह पापी शत्रुओं के बाणों द्वारा मार नहीं दिया जाता है तब तक मैंने युद्ध में अपने प्रिय अस्त्र का भी परित्याग कर दिया। इस कर्ण के नेतृत्व वाले संग्राम में क्रुद्ध भीम तथा अर्जुन के द्वारा भय उत्पन्न किए जाने के अवसर पर राजा अपने प्रिय मित्र कर्ण के बल को समझ लें।

नकुल सहदेव

महाभारत के प्रमाण के आधार पर नकुल सहदेव पाण्डु और माद्री के पुत्र थे। नाटक के षष्ठ अंक में नकुल की उपस्थिति चार्वाक के वध के समय दिखाया गया है। सहदेव के चरित्र की योजना नाटक के प्रथम अंक में ही प्राप्त होती है। सहदेव कौरवों पर क्रोध करते हुए कहते हैं यदि महाराजा (युधिष्ठिर) रोकने वाले ना हो तो आपका कौन कनिष्ठ भ्राता पग–पग पर शत्रुता करने वाले धृतराष्ट्र के पुत्रों को सहन करें महाभारत में नकुल और सहदेव के चरित्र का पूर्ण विकास दिखाया गया है। पर यहां पर नाटककार द्वारा कथा में विभेद दिखाने के लिए नाम मात्र का उल्लेख किया गया है।

धृतराष्ट्रस्य तनयान्कृतवैरान् पदे पदे।
राजा न चेत्रिषेद्धा स्यास्कः क्षमेत तवानुजः।।[8]

अर्जुन

देवराज इंद्र द्वारा कुंती एवं पाण्डु का पुत्र था। एक अतुलनीय धनुर्धर जिसको श्रीकृष्ण ने श्रीमद् भगवत गीता का उपदेश दिया था। जिसने युद्ध में बडे–बडे योद्धाओं का वध किया है।

अप्रियाणि करोत्येष वाचा शक्तो न कर्मणा।
हतभ्रातृशतो दुःखी प्रलापैरस्य का व्यथा।।[9]

अर्थात्: सौ भाइयों के मारे जाने के कारण दुःखी यह (दुर्योधन) वाणी द्वारा ही अप्रिय बकवाद कर रहा है। कर्म करने में समर्थ नहीं है। इसके प्रलापों से दुःख ही क्या?

प्रमुख स्त्री पात्र

द्रौपदी

नाटक की स्वकीया मुग्धा नायिका है। वह उच्च क्षत्रिय कुल में जन्मी वीरांगना है। उसे पितृ कुल तथा प्रतिकूल दोनों की मर्यादाएं प्राणों से भी प्रिय है। इस नाटक वेणीसंहार नामकरण से भी संपूर्ण नाटक की घटनाएं द्रौपदी को केंद्र बनाकर घूमती रहती है। उनके पॉच गांव मांगने की संधि शर्त को दुर्योधन द्वारा स्वीकार ना किए जाने लाक्षा गृह अग्नि कांड तथा विषदान आदि अनेक घटनाओं के कारण ही महाभारत जैसा भीषण नरसंघार हुआ परंतु द्रौपदी का केश पकड़ कर दुःशासन द्वारा सभा में खींचा जाना भीम का क्रोधानल बना तथा निरंतर उसकी खुली वेड़ी उसमें आहुति का कार्य किया भीमसेन अपनी प्रिया के आंसुओं को पोछने के लिए उसके खुले बालों को बांधने की प्रतिज्ञा कर लेते है।

वही नायिकाओं में भी होते हैं। वेणीसंहार नाटक की नायिका द्रौपदी राज्ञी स्वकीया नायिका है। स्वकीया का लक्षण करते हुए कहा गया है जिस स्त्री में नम्रता सरलता गृहकार्य कुशलता प्रतिव्रता आदि गुण विद्यमान होते हैं। वह स्वकीया नायिका कही जाती है। अग्नि को साक्षी बनाकर जिस स्त्री का विवाह समान कुल और शील वाले पुरुष से होता है। वही नायिका स्वकीया कहलाती है ऐसी नायिका सम्पति विपत्ति और मृत्यु में भी पति का परित्याग नहीं करती है ऐसी स्वकीया पुण्य शाली व्यक्ति को प्राप्त होती है। नाटक के प्रथम अंक में युद्ध के लिए जाते हुए भीमसेन को प्रोत्साहित करना, इस बात को सिद्ध करता है कि महायज्ञ द्रौपदी वीर क्षत्राणी है वीर क्षत्राणी के अतिरिक्त किसी में इस प्रकार का साहस नहीं हो सकता युद्ध के लिए पति को प्रोत्साहन देना विरांगना का ही कार्य है। महाराज्ञी द्रोपदी वीर क्षत्राणी पतिव्रता होने के साथ–साथ दयालु भी है जो दुर्योधन का मित्र राक्षस महर्षि के वेश में आया है। द्रोपदी उसका भी आदर सत्कार करती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि महाराज्ञी द्रोपदी में स्वकीया नायिका के सारे गुण विद्यमान हैं। नम्रता, पतिव्रता, वीर क्षत्राणी तथा अपने गुरुजनों का आदर करने वाली है।

हा नाथ भीमसेन! हा मम परिभव प्रतीकारपरित्यक्तजीवित।
जरासुर–बक–हिडिम्ब–किर्मीट–कीचक–जरा–सन्ध–निषूदन!
सौगन्धिकाहरण–चाटुकार! छेहि मे प्रतिवचनम्।।[10]

अर्थात्: हां नाथ भीमसेन! हां मेरे तिरस्कार का बदला लेने के लिए अपने प्राण दे देने वाले। हां जरासूर, बक, हिडिंब, किर्मिट, कोचक तथा जरासंध का नाश करने वाले। हां गंधमादन पर्वत पर होने वाले स्वर्ण कमल को लाकर मुझे प्रसन्न करने वाले मुझे प्रत्युत्तर दीजिए।

हा नाथ भीमसेन! युक्तमिदानी ते कनीमांसं भ्रातरम–
शिक्षितं गढ़ायां दारूणस्य शत्रोरभिमुखं गच्छन्तभुपेक्षितुम्।।[11]

अर्थात्: हा नाथ भीमसेन। गदा युक्त अकुशल अपने छोटे भाई की दारुण शत्रु के सम्मुख जाने को अब उपेक्षा करना उचित नहीं है यह कहकर मूर्छित हो जाती है।

गांधारी

गांधार के राजा की पुत्री और धृतराष्ट्र की पत्नी। गांधारी नाटक की एक पात्र है, वो महाराज धृतराष्ट्र की पत्नी थी और प्रमुख खलनायक दुर्योधन की मां थी। गांधारी देख सकती थी लेकिन पति के आंखों से विकलांग होने के कारण उन्होंने खुद की आंखों पर भी हमेशा के लिए एक पट्टी बांध ली थी महाभारत के अनुसार वह सौ पुत्रों की माता थी।

हा जात दुःशासन! हा दुर्मर्षण! हा विकर्ण!
हा वीरशतप्रसविनि गान्धारि, दुःखशतं प्रसूता न सुतशतम्।[12]

अर्थात्: हा पुत्र दुःशासन! हां विकर्ण! हां वीर प्रसविनी गांधारी। तूने सौ पुत्र नहीं जिनमें बल्कि सौ दुःखों को पैदा किया था।

जात! एतदेव साम्प्रतं प्रभूतं यत्वमपि तावदेको जीवसि।
कमन्यमनु–शोचिष्यामि। तज्जात! अकालस्ते समरस्य। प्रसीद।
एष तेऽञ्जलिः। निवर्तस्व समरव्यापारात्।
अपश्चिमं कुरू पितुर्वचनम्।[13]

अर्थात्: हे बेटे! यदि तुम अकेले भी जीवित रहते हो तो यह सदा पर्याप्त है और किस की चिंता करूंगी। अतः बेटे तुम्हें युद्ध करने का समय नहीं है। प्रसन्न हो जाओ मैं यह हाथ जोड़ रही हूं युद्ध कार्य से अलग हो जाओ पिता के वचनों का उल्लंघन मत करो।

भानुमती

यह प्रतिनायक कौरवराज दुर्योधन की पत्नी है। यद्यपि उसका पति उद्धत स्वभाव वाला क्रूर ह्रदय है। पर भानुमति उच्च कोटि की सरल ह्रदया साध्वी भारतीय नारी का सच्चा स्वरूप है। वह स्वप्न

में भी अपने पति का अनिष्ट देखकर उसका निवारण करने में जुड़ जाती है। केनाप्यतिशयितदिव्य रूपिणा नकुलेनादिसतं व्यापादितम्।। स्वप्न को परिजनों में कहते–कहते अत्यधीर हो उठती है। वह धर्म भीरु है इस स्वप्न के अनिष्ट निवारणार्थ सखी के अर्ध्यदान हेतु अर्ध्यपात्र मंगाती है। वह अचानक व्रत भंग करने वाले अपने पति दुर्योधन से भी व्रत पूर्ण करने की अनुनयविनय करती है। इस प्रकार नाटक के केवल द्वितीय अंक में नाम मात्र को दिखलाई पड़ने वाली भानुमति पति परायण धर्मभीरु उत्तम चरित्र वाली क्षत्राणी है।

> ततोऽहं तस्यातिशयितदिव्यरूपिणो नकुलस्य दर्शनेनोत्सुका जाता हृतहृदया च। तत उज्झित्वा तदासनस्थानं लतामण्डपं प्रवेष्टुमारब्धा।[14]

अर्थात्: हे सखी उस समय मैं उस अतिशय सुंदर रूप वाले नकुल के दर्शन से उत्सुक होकर पराधीन चित हो गई तथा उस स्थान को छोड़कर लतामंडप में घुसने लगी।

> तत आर्यपुत्रस्य प्रभातमङ.गलतूर्यरवमिश्रेण वारविलासिनोजनसङ.गीतरवेण प्रतिबोधिताऽस्मि। [15]

अर्थात्: हे सखी फिर आर्यपुत्र के प्रातः कालीन मंगलवाद्य की ध्वनि युक्त वारविलासिनीयो वेश्याओं के संगीत शब्द से मैं जाग गई।

उपसंहार

इस प्रकार से हम कह सकते हे कि महाकवि भट्टनारायण ने भारतीय संस्कृति के आदर्शो पर आधारित व्यापक सामाजिक जीवन की दृष्टि से पात्रों के विविध स्वरूपों एवं सम्बंधों का तदनुरू चित्रण किया है । इनकी वेशभूषा,खानपान,दायित्व पूर्ण क्रियाये गृहस्थ जीवन में देशकाल पात्र के अनुरूप चित्रित हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. पाण्डेय श्री पंडित परमेश्वरदीन एवं पाण्डेय अवनकुमार 2017 वेणीसंहार नाटकम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ैठछ रू 978.93.85005.00.8 1ध्10
2. पाण्डेय श्री पंडित परमेश्वरदीन एवं पाण्डेय अवनकुमार 2017 वेणीसंहार नाटकम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ैठछ रू 978.93.85005.00.8 1ध्8
3. पाण्डेय श्री पंडित परमेश्वरदीन एवं पाण्डेय अवनकुमार 2017 वेणीसंहार नाटकम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ैठछ रू 978.93.85005.00.8 6ध्20
4. पाण्डेय श्री पंडित परमेश्वरदीन एवं पाण्डेय अवनकुमार 2017 वेणीसंहार नाटकम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ैठछ रू 978.93.85005.00.8 6ध्1
5. पाण्डेय श्री पंडित परमेश्वरदीन एवं पाण्डेय अवनकुमार 2017 वेणीसंहार नाटकम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ैठछ रू 978.93.85005.00.8 3ध्37
6. पाण्डेय श्री पंडित परमेश्वरदीन एवं पाण्डेय अवनकुमार 2017 वेणीसंहार नाटकम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ैठछ रू 978.93.85005.00.8 3ध्39
7. पाण्डेय श्री पंडित परमेश्वरदीन एवं पाण्डेय अवनकुमार 2017 वेणीसंहार नाटकम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ैठछ रू 978.93.85005.00.8 3ध्45
8. पाण्डेय श्री पंडित परमेश्वरदीन एवं पाण्डेय अवनकुमार 2017 वेणीसंहार नाटकम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ैठछ रू 978.93.85005.00.8 3ध्42
9. पाण्डेय श्री पंडित परमेश्वरदीन एवं पाण्डेय अवनकुमार 2017 वेणीसंहार नाटकम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ैठछ रू 978.93.85005.00.8 1ध्9ए7
10. पाण्डेय श्री पंडित परमेश्वरदीन एवं पाण्डेय अवनकुमार 2017 वेणीसंहार नाटकम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ैठछरू978.93.85005.00.8 5ध्23 पृ.262
11. पाण्डेय श्री पंडित परमेश्वरदीन एवं पाण्डेय अवनकुमार 2017 वेणीसंहार नाटकम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ैठछ रू 978.93.85005.00.8 6ध् पृ. 343, 346
12. पाण्डेय श्री पंडित परमेश्वरदीन एवं पाण्डेय अवनकुमार 2017 वेणीसंहार नाटकम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ैठछ रू 978.93.85005.00.8 5ध् पृ.255
13. पाण्डेय श्री पंडित परमेश्वरदीन एवं पाण्डेय अवनकुमार 2017 वेणीसंहार नाटकम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ैठछ रू 978.93.85005.00.8 2ध् पृ.74,80
14. पाण्डेय श्री पंडित परमेश्वरदीन एवं पाण्डेय अवनकुमार 2017 वेणीसंहार नाटकम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ैठछ रू 978.93.85005.00.8 2ध् पृ.105
15. पाण्डेय श्री पंडित परमेश्वरदीन एवं पाण्डेय अवनकुमार 2017 वेणीसंहार नाटकम्, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ैठछ रू 978.93.85005.00.8 2ध् पृ. 106